सुण उड़ी बात नई री कीर्तन में | By Narendra Kaushik |

पा पागल गई री कीर्तन में
सुण उड़ी बात नई री कीर्तन में

बाबा का दरबार लग्या था
देसी घी का दीप जग्या था
ओ सबने महक गई री कीर्तन में
सुण उड़ी बात नई री कीर्तन में

जय बजरंग की सारे बोले
एक सबर था, प्यार न बोले
ओ जय-जय गूंज रही री कीर्तन में
सुण उड़ी बात नई री कीर्तन में

हो जब ऊड़ अर्ज़ी लावण लागे
अपणा रोज कटावण लागे
बाबा ने दी पोल वही कीर्तन में
सुण उड़ी बात नई री कीर्तन में

देके गयौं पाती के ढंग ने
ओ छ्रांव में भरके बलवान सिंह ने
दो-तीन बात कही री कीर्तन में
सुण उड़ी बात नई री कीर्तन में

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b8%e0%a5%81%e0%a4%a3-%e0%a4%89%e0%a4%a1%e0%a4%bc%e0%a5%80-%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%a4-%e0%a4%a8%e0%a4%88-%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%95%e0%a5%80%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%a4%e0%a4%a8-%e0%a4%ae/